पण्डित जी की विदेश यात्रा

भारतीय जनसंघ के दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए प्रभाव को कम करने के लिए कांग्रेस का जनसंघ के विरूद्ध भ्रामक प्रचार बराबर जोर पकड़ता जा रहा था। विदेशों में भी यह दुष्प्रचार जारी था। अत: इस प्रकार का निर्णय लिया गया कि जनसंघ की बिगाड़ी जा रही छवि को विदेशों में सुधारा जाय और पण्डित जी ने इस कार्य के लिए अमेरिका, पश्चिमी जर्मनी, इंग्लैंड तथा पूर्वी अफ्रिका के देशों का दौरा किया। वहां पर पण्डित जी ने सभाओं को सम्बोधित किया। वहां के प्रवासी भारतीयों से मिले और इंग्लैंड में, वहां की संसद को भी सम्बोधित किया। पण्डित जी के इस प्रवास का जनसंघ को बहुत लाभ हुआ। इन देशों के निवासी भारतीयों का सारा स्पष्टीकरण प्राप्त करने के बाद उनका मनोबल ऊंचा हो गया और भारत के प्रति अपने सूत्र जोड़ने में उन्हें सफलता प्राप्त हुई। इस प्रवास में पण्डित जी ने अत्यन्त निकट से पाश्चात्य जीवन को देखा और वहॉ के आर्थिक तथ्यों का अध्ययन किया। पण्डित जी ने इस प्रवास में और अपने कई भारतीय तथा विदेशी मित्र बनाये जो आजीवन उनके प्रशंसक बने रहे। इसी प्रवास में उन्होंने श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी, श्री मनोहर लाल सोंधी तथा डॉ. नारायण स्वरूप शर्मा जैसे व्यक्तियों को पुन: भारत लौटने की प्रेरणा भी दी।

जब पण्डित जी चुनाव लड़े

1963 में जौनपुर के संसदीय उपचुनाव में पण्डित जी के न चाहते हुए भी एक तरह से, पण्डित जी के पीछे पड़कर और उनका घेराव करके पार्टी कार्यकर्ताओं ने उन्हें चुनाव में खड़ा कर दिया। पण्डित जी चुनाव लड़े, सिद्धांतों के आधार पर पूरी शक्ति से लड़े परन्तु उन्होंने कांग्रेस प्रत्याशी की तरह चुनाव में जातिवाद को उभारने अथवा धन को वोटों की खरीद के लिए उपयोग, करने से स्पष्ट मना कर दिया। पण्डित जी चुनाव हार गए और बड़ी उदारता व सरलता के साथ उन्होंने पत्रकारों के बीच अपनी इस हार को हंसकर स्वीकार कर लिया, ''अरे भाई मुझे हारना तो था ही, कांग्रेस का प्रत्याशी मुझसे कहीं अधिक योग्य था और बहुत वर्षों से इस क्षेत्र में जनसेवा कर रहा था।'' अर्थात् सुख और दु:ख जय और पराजय, गीता के एक स्थितप्रज्ञ ऋषि के समान उनके लिए समान थे।

सत्ता में भागीदार

1967 तक पहुंचते-पहुंचते श्रीमती इन्दिरा गॉधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी पतन की ओर तेजी से बढ़ने लगी और 1967 में पूरे उत्तर भारत के समस्त हिन्दी भाषी प्रान्तों में, पंजाब और गुजरात में, विरोधी पक्ष की मिली-जुली संविद